



Naad – Nartan *Journal of Dance and Music*

ISSN 2349-4654 Print

REFEREED & PEER REVIEWED ANNUAL MULTI-LINGUAL JOURNAL

Volume 14, Issue-1, January 2026

Chief Editor: Prof. Ravi Sharma

Former Dean & Head, Deptt. of Music, M. D. University, Rohtak-124001

Former Director Incharge School of Performing & Visual Arts, IGNOU Maidan Garhi, New Delhi

Address: 28, Bharti Artist Colony, Vikas Marg, Delhi – 110092

E-mail: naadnartanjdm@gmail.com

Naad-Nartan Journal of Dance & Music
(Referred & Peer Reviewed Annual Bi-Lingual Journal)
© Naad-Nartan (Regd.), Delhi

Chief Editor

Prof. Ravi Sharma, Former Dean & Head, Deptt. Of music, M. D. University, Rohtak-124001
Former Director Incharge School of Performing & Visual Arts, IGNOU Maidan Garhi, New Delhi
Address: 28, Bharti Artist Colony, Vikas Marg, Delhi – 110092
E-mail: naadnartanjdm@gmail.com

Editors for this issue:

Chief Editor : Prof. Ravi Sharma, Former Dean & Head, Deptt. of Music, M. D. University, Rohtak
Associate Editor : Prof. Sabyasachi Sarkhel, Sangeet Bhavana, Vishva Bharti University, Shantiniketan

Advisory Board:

Prof. Madhubala Saxena, Former Dean, Faculty of Indic Studies, Former Chairperson, Deptt. of Music & Dance, Former officially Vice-Chancellor, Kurukshetra University, Kurukshetra

Assistant Editors :

Prof. Jayant Khot, Deptt. of Music, Allahabad University, Allahabad
Prof. Rajesh Shah, Deptt. of Music, Banaras Hindu University, Banaras
Prof. Ajay Ashtaputre, Faculty of Performing Arts, M. S. University, Vadodara
Dr. Rajesh Kelkar, Faculty of Performing Arts, M. S. University, Vadodara
Prof. Gurang Bhavsar, Faculty of Performing Arts, M. S. University, Vadodara
Dr. Simmi, Deptt. Of Dance, Punjabi University, Patiala
Prof. Yashpal Sharma, Deptt. of Music, Punjabi University, Patiala
Dr. Vedprakash Sharma, Former, Lecturer–Music, DOE, Govt. of NCT of Delhi
Dr. Ragini Trivedi, Former Assistant Professor, Govt. P. G. Girls College, Indore
Dr. Jatinder Kaur, Former Associate Professor, Deptt. of Music (Vocal), Khalsa College for Women, Amritsar
Prof. Nivedita Singh, Deptt. Of music, Punjabi University, Patiala
Dr. Alankar Singh, Associate Professor, Deptt. Of music, Punjabi University, Patiala
Dr. Himanshu Vishvaroop, Associate Professor, IKSUV, Khairagarh
Dr. Indira Bali, Deptt. Of Dance, Punjabi University, Patiala
Dr. Vijaya Sharma, Head, Deptt. Of Dance, Govt. Maharani Laxmibai Girls PG Agraji College, Bhopal
Dr. Rohitha Eswer, Department of Ancient History and Archeology and Museology, Maharaja College, University of Mysore, Mysore
Dr. V Premalatha, Head, Dept. of Music, Dean, School of Performing Arts and Fine Arts, Central University of Tamilnadu, Thiruvavur.
Dr. Pragya Pyasi, Deptt. Of Music, University of Hyderabad
Dr. Pavani D., Deptt. Of Music, University of Hyderabad
Dr. Rajesh Sharma, Assistant Professor, Deptt. of Music, GND University, Amritsar
Palomi Mukherjee, Kathak Exponent, Mumbai
Dr. Mallika Banerji, Associate Professor, SOPVA, IGNOU, Delhi
Prof. Jagmohan Sharma, Govt. College for Girls, Patiala

Legal Advisor: Sh. Ravinder Pal, Legal Co-ordinator, Punjabi University, Patiala
Designing & Computer job work : Prof. Ravi Sharma, Sh. Ashish Pathak

ISSN: 2349-4654 (Print)

Published by

Naad-Nartan (Regd.)
(Society for safeguarding intangible cultural heritage through education and research)
28, Bharti Artist Colony, Vikas Marg, Delhi-110092 (India)

The opinions expressed in the articles published in the Journal do not represent the editorial views or policies of Naad-Nartan Journal of Dance & music

All the persons mentioned above in any capacity are non salaried.



Editorial

The present volume comprises selected research articles presented by scholars from across India and abroad at the conference held in Lucknow from 18th to 20th September 2025, organized in collaboration with Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya and the Ministry of Culture, Government of India. Only those articles recommended by the review committee have been included in this publication.

The complete report of the conference is now available within this journal. We offer this compilation to the scholars, chairpersons, and experts whose active participation and paper presentations drove the success of the research proceedings.

During the review process, certain discrepancies were identified in many submissions. These observations were communicated to the respective authors, who were requested to address them with due sensitivity. After careful verification of the revisions and upon the committee's satisfaction, the corrected articles were approved for publication in this volume.

India is celebrating 150th anniversary of composition of Vande Mataram. It has unique role in the history of India. On 1st October, 2025 the cabinet approved countrywide celebration of 'Vande Mataram' to foster an impactful movement to connect citizens, especially youth and students, with the song's original, revolutionary spirit. We are including its complete history in this journal. As students of music, it is important for us to understand the full background of the author, the music director and the singers.

In conclusion, we extend our heartfelt gratitude to all the distinguished research scholars who have generously contributed their valuable articles to this journal. Their diverse perspectives, innovative ideas, and rigorous analyses across a wide range of topics have enriched the academic discourse and strengthened the foundation of future research. It is through their dedication and scholarly excellence that this publication continues to serve as a vibrant platform for knowledge sharing and intellectual growth. We sincerely thank them for their commitment to advancing research and look forward to their continued contributions in the years ahead.

We extend our sincere gratitude to the session's chairpersons for their expert moderation and for fostering insightful dialogue throughout the various tracks.

Special thanks to Vice-Chancellor Prof. Mandavi Singh and Registrar Dr. Srishti Dhaon for providing the facilities and resources necessary to host the conference.

Ravi Sharma

Chief Editor

वंदे मातरम् एक ऐसा राष्ट्रीय गीत जिसकी गूँज 150 वर्ष पहले समस्त भारत की एकता का प्रतीक बन गया था। तभी से यह गीत समस्त भारत में अत्यंत मनोयोग से गाया जाता रहा है। संगीत सीख रहे विद्यार्थी तो इसे अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अवश्य रूप से गाते हैं। यह गीत क्यों और किन परिस्थितियों में लेखक द्वारा लिखा गया था – इसका ज्ञान भी केवल संगीत के विद्यार्थियों को ही नहीं अपितु सभी देशवासियों को होना चाहिए।

इस गीत रचना के पीछे एक विवाद है जो की 1873 में घटित हुआ था। यह घटना बंगाल के मुर्शिदाबाद की है, जहाँ एक क्रिकेट मैच चल रहा था जिसका नेतृत्व बहरमपुर के कैनटोनमेंट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डफिन कर रहे थे। उसी दिन शाम को मुर्शिदाबाद जिला के डिप्टी कलेक्टर बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय अपनी पालकी से घर लौट रहे थे। पालकी को उठा रहे मजदूर गलती से या बेध्यानी में क्रिकेट मैदान से होकर निकाल गए। जिससे मैच में व्यवधान पहुँचा। क्रोध में आकर कर्नल डफिन ने पालकी से बंकिमचंद्र को बाहर निकाला और उन्हें कई घूँसे मार दिए। यह घटना कई प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में हुई थी, जिनमें प्रिंसिपल रॉबर्ट हैण्ड, रेवरेण्ड बाली, जज ब्रेनबिज, लालगोला के राजा योगेंद्र नारायण राय, दुर्गाचरण भट्टाचार्य तथा कई अन्य ब्रिटिश और भारतीय गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

बंकिमचंद्र यह अपमान सहन नहीं कर सके। वे 16 दिसम्बर 1873 को मुर्शिदाबाद के जिला मजिस्ट्रेट मिस्टर विण्टर की अदालत में कर्नल डफिन के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई। अंततः कर्नल डफिन ने अदालत में हाथ जोड़कर माफी माँगी।

यह भी कहते हैं कि गुप्त रूप से ब्रिटिश अधिकारियों ने बंकिमचंद्र की हत्या की साजिश रची थी। यह बात जब लालगोला के राजा योगेंद्र नारायण राय को पता चली

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

— प्रो. रवि शर्मा

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम् ॥
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥
वन्दे मातरम् ॥

सप्तकोटिकण्ठकलकलनिनादकराले
द्विसप्तकोटिभुजैर्धृतखरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम् ॥
वन्दे मातरम् ॥

तुमि विद्या तुमि धर्म।
तुमि हृदि तुमि मर्म।
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति।
हृदये तुमि मा भक्ति।
तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे ॥
वन्दे मातरम् ॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी।
नमामि त्वाम् नमामि कमलाम्
अमलाम् अतुलाम् सुजलाम् सुफलाम् मातरम् ॥
वन्दे मातरम् ॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम् ॥
वन्दे मातरम् ॥

तो बंकिमचंद्र को अपने लालगोला स्थित निवास स्थान पर आमंत्रित किया, जहाँ वे जनवरी 1874 में आकार रहने लगे।

लालगोला में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने जगद्धात्री, दुर्गा और काली मंदिरों के दर्शन किये। वहीं उन्होंने यह विचार किया कि भारत को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक सूत्र में कैसे बाँधा जाए जो सबको एक कर दे। अंततः 7 नवंबर 1875 को बंकिचन्द्र चैटर्जी ने वंदे मातरम् जैसी अमर रचना रची। यह वह मंत्र था जिसने कलांतर में भारतीयों में देश भक्ति की ज्योति जलायी और अंग्रेजों के मन में भय पैदा किया। “बंकिमचंद्र ने एक कालजयी उपन्यास लिखा ‘आनंद मठ’ जिसमें उन्होंने इस गीत को सम्मिलित किया और बहुत प्रसिद्धि मिली।” वे एक पत्रिका बंग दर्शन का प्रकाशन करते थे जिसमें यह कविता 1881 में प्रकाशित हुई, इसके पश्चात सम्पूर्ण कविता 1882 में आनंद मठ नामक उपन्यास में प्रकाशित हुई थी। (सिंह) तब इसमें छः छंद प्रकशित हुए थे। मुख्यतः इसके पहले दो बंध ही लंबे समय तक गाए जाते रहे।

विष्णुपुर घराने के पंडित जदुनाथ भट्टाचार्य बंकिचन्द्र के संगीत गुरु थे और वे उनसे नियमित रूप से संगीत की शिक्षा लेते थे। इस गीत को संगीत में बद्ध करने के लिए उन्होंने अपने गुरु से आग्रह किया था कि वे इस गीत को संगीतबद्ध करें। उन्होंने इसे काफी राग तथा तीनताल में निबद्ध किया था। अत्यंत जोशीला प्रवृत्ति तथा संस्कृत बंगाली मिश्रित भाषा ने इसे लोकप्रिय बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सर्वप्रथम कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसे 1896 में कलकत्ता में हुए काँग्रेस के अधिवेशन में गाया था। उन्होंने वंदेमातरम के प्रथम दो छंदों को ही गाया था। स्वतंत्रता आंदोलन का यह गीत प्रत्येक व्यक्ति का मूल मंत्र बन गया था। इस 1896 के काँग्रेस अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा इस गीत के बाद इसे अखिल भारतीय स्वीकृति मिली थी। जैसा की पहले भी बताया गया है की सम्पूर्ण पाठ में छः छंद हैं।

वर्ष 1923 में पंडित विष्णु दिगम्बर ने काँग्रेस के अधिवेशन में कई मेम्बर्स के विरोध में बाद भी वंदे मातरम् गया था। वे इसे काँग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में 1915 से गाते ही आ रहे थे। लेकिन मौलाना मोहम्मद अली जौहर जो कि काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे तथा उनके भाई शौकत अली खाँ ने विष्णु दिगम्बर द्वारा वंदेमातरम के गायन का विरोध किया था। उनका कहना था कि क्योंकि इस गीत में हिन्दू धर्म की स्तुति है इसलिए इसे मंच पर नहीं गया जाना चाहिए। इस पर पंडित पलुस्कर ने विरोध जताते हुए कह दिया कि यह एक जनसभा है, किसी एक धर्म का उपासना केंद्र नहीं। जिन्हें आपत्ति है, वे चाहे तो सभा छोड़कर जा सकते हैं। इसके बाद पंडित जी ने पूरा गाना सुनाया था। (अस्थाना)

वंदेमातरम् का संबंध बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अत्यंत गहरा रहा है। पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के शिष्य पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने दस मिनट तक वंदेमातरम गया था। स्वतंत्र भारत की हवा में प्रातः 6:30 बजे इसका प्रसारण किया गया। भारत के स्वतंत्रता पर संसद भवन में मध्यरात्रि पर 14 और 15 अगस्त के बीच आजादी का उत्सव मनाने के लिए एक कार्यक्रम रखा गया। सरदार वल्लभभाई पटेल ने बी एच यू के संगीत एवं मंच कला संकाय के संस्थापक रहे पंडित ओंकारनाथ ठाकुर-उस समय मद्रास (चेन्नई) में थे-को वायरलेस संदेश भेजकर संसद में वंदेमातरम गाने का अनुरोध किया। इस पर पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने जवाब दिया कि वंदेमातरम के पूरे 22 पंक्तियों वाले रूप को ही गाएँगे। उनकी ये शर्त सरदार पटेल ने स्वीकार कर ली। पंडित जी विशेष विमान से दिल्ली पहुँचे थे और संसद भवन में मध्यरात्रि के समय वंदे मातरम् गया

था। अगले दिन सुबह 6:30 बजे आकाशवाणी पर उनकी प्रस्तुति का प्रसारण किया गया तो पूरे देश में इस गीत की गूँज हो गई। (अस्थाना) वंदेमातरम की इस यात्रा में मैडम भिकाजी कामा का योगदान नहीं भुलाया जा सकता। वर्ष 1907 में जर्मनी में आयोजित इंटरनेशनल सोशलिस्ट काँग्रेस में इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता का झण्डा फहराया था जिसके ऊपर 'वंदे मातरम' अंकित था। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमित छाप छोड़ गई। (pib)

वंदे मातरम् संबंधी नए दिशा निर्देश

वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने के उपलक्ष में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय गीत के सम्मान को बढ़ाने की दिशा में बड़ा निर्णय लिया है। अब राष्ट्रगान से पहले राष्ट्रगीत गाया जाएगा। स्कूलों में प्रातःकाल की शुरुआत राष्ट्रगीत से होगी। राष्ट्रगीत के दो नहीं बल्कि पूरे छः छंद गए जाएंगे। गृह मंत्रालय की ओर से जारी नए प्रोटोकॉल के अनुसार सरकारी कार्यक्रमों, स्कूलों आदि अहम आयोजनों में वंदे मातरम् का गायन अनिवार्य होगा।

28/1/2026 को गृह मंत्रालय की ओर से जारी नए निर्देशों के अनुसार, 'वंदेमातरम' के सभी छः छंदों को कुल 3:10 मिनट में गाना होगा। वहीं किसी कार्यक्रम में राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान दोनों का गायन होगा तो पहले वंदेमातरम गाना होगा। (ssconline)

सरकार ने यह निर्णय लिया कि 'वंदेमातरम' के 150 वर्ष होने के उपलक्ष में पूरे देश में एक वर्ष तक चलने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की एक श्रृंखला चलाई जाएगी। इस समरणोत्सव का उद्घाटन प्रधानमंत्री



श्री नरेंद्र मोदी ने 7/11/2025 को सुबह इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में उद्घाटन किया। जिसमें देश के विभिन्न भागों से आए 25000 प्रतिभागियों ने एक साथ 'वंदेमातरम्' के सम्पूर्ण पाठ को प्रधानमंत्री की उपस्थिति में सस्वर गाया।

इस उपलक्ष में प्रधानमंत्री ने एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया।

राष्ट्रीय गीत कब जरूरी: गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देश यह निर्देश करते हैं कि आधिकारिक और सार्वजनिक कार्यक्रमों में राष्ट्रगान कैसे गाया या बजाया जाना चाहिए, जिसमें पूरे देश में एकरूपता, शालीनता और सम्मान सुनिश्चित हो सके।

1. गृह मंत्रालय के इस आदेश में यह अनिवार्य किया गया है कि जब भी किसी आधिकारिक कार्यक्रम या सभा में राष्ट्रगान गाया जाएगा, तो गीत का पूरा आधिकारिक संस्करण ही गाया जाएगा।
2. बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित, राष्ट्रगान में छह छंद हैं, जो मिलकर इसका पूर्ण आधिकारिक संस्करण बनाते हैं, जिसकी कुल अवधि लगभग 3 मिनट और 10 सेकंड है।
3. दिशा-निर्देशों में इस बात पर जोर दिया गया है कि राष्ट्रगान बजने या गाए जाने के दौरान सभी को सावधान मुद्रा में खड़ा होना चाहिए, सिवाय उस स्थिति के जब इसे किसी फिल्म/वृत्तचित्र के हिस्से के रूप में बजाया जा रहा हो।
4. आदेश में निर्दिष्ट है कि राष्ट्रगान निम्नलिखित समय के दौरान गाया जाएगा—



- ❖ नागरिक अलंकरण समारोहों में
 - ❖ औपचारिक समारोह में राष्ट्रपति का आगमन/प्रस्थान
 - ❖ राष्ट्रपति द्वारा रेडियो/टीवी पर राष्ट्र को संबोधित करने से पहले और बाद में
 - ❖ औपचारिक समारोह में राज्यपाल का आगमन/प्रस्थान
 - ❖ जब भी राष्ट्रीय ध्वज को परेड में लाया जाता है
5. वंदे मातरम् का आधिकारिक संस्करण निम्नलिखित अवसरों पर सामूहिक गायन में बजाया जाएगा—
 - ❖ राष्ट्रीय ध्वज का फहराना
 - ❖ सांस्कृतिक अवसर
 - ❖ परेड के अलावा अन्य औपचारिक समारोह
 - ❖ अनौपचारिक सार्वजनिक समारोहों में राष्ट्रपति का आगमन/प्रस्थान
 - ❖ सरकारी कार्यक्रम
 - ❖ सभी स्कूलों में
 6. सभी विद्यालय अधिकारियों को ऐसे संरचित कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रगान के नियमित गायन को बढ़ावा दें, साथ ही साथ राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान को दैनिक पाठ्यक्रम के एक अभिन्न अंग के रूप में बढ़ावा दें।
 7. जब कोई बैंड राष्ट्रगान बजाएगा, तो उससे पहले सात धीमी गतियों वाली ढोल की थाप बजेगी, जो धीरे-धीरे चरम पर पहुँचकर गीत शुरू होने से पहले धीमी हो जाएगी। गीत शुरू होने से पहले एक ताल का विराम होगा।
 8. जिस भी समारोह में राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत का गायन होना हो, उसमें सर्वप्रथम वंदे मातरम् गाया जाएगा।



संदर्भ सूची

- ❖ आनंद मठ का पुनर्मूल्यांकन, गीता दुबे, सबलोग, अंक 143, जनवरी 2026
- ❖ यादें, हिमांशु अस्थाना, अमर उजाला ब्यूरो, वाराणसी, 10 दिसम्बर, 2025
- ❖ वंदे मातरम, विवाद और पुनर्पाठ, मृत्युंजय कुमार सिंह, सबलोग, अंक 143, जनवरी 2026
- ❖ <https://www.vandemataram150.in/event-details/4246>
- ❖ Accessed on 03 March 2026 at 12:43 PM
- ❖ <https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=11804®=3&lang=2>
- ❖ Accessed in 26th February 2026 9:27 PM
- ❖ <https://www.theresource24x7.com> Accessed on 03 March 2026 at 12:43 PM
- ❖ <https://www.scconline.com/blog/post/2026/02/12/mha-issued-guidelines-on-singing-national-song-2026/> Accessed on 19th March 2026, 9:57 PM

Report of 7th International Conference and Concert 2025

Naad Nartan (Regd.) successfully organized a three-day 7th International Conference and Concert from 18th to 20th September 2025 in collaboration with Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya and the Ministry of Culture. The conference was held at Kala Mandapam on the university campus, Lucknow.

About the Host Institution

Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya, currently celebrating its centenary year, is a pioneer institution in the field of Indian classical music. It was founded under the visionary leadership of Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, with the support of Late Rai Umanath Bali, Late Rai Rajeshwar Bali, and other eminent patrons of Lucknow. The institution was initially inaugurated by Sir William Marris, the then Governor of Awadh, and named “Marris College of Music.” It was later renamed Bhatkhande College of Hindustani Music and subsequently declared a Deemed University by the Government of India. In June 2022, it was renamed Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya. Prof. Mandavi Singh became the first Vice-Chancellor of the institution in its new designation.

Memorandum of Understanding

A five-year Memorandum of Understanding (MoU) was signed between Naad Nartan (Regd.) and Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya on the initiative of the Vice-Chancellor. The MoU was formally signed by Registrar Dr. Srishti Dheon and Prof. Ravi Sharma, President Naad Nartan in the presence of the Vice-Chancellor and Dr. Ruchi Khare, Assistant Professor (Kathak Dance) and Controller of Examination.

Both institutions resolved to promote national and international academic cooperation through seminars, conferences, workshops, and festivals. They also committed to expanding research activities, especially in academic writing in the field of music. The motto of Naad Nartan, “Society for safeguarding intangible cultural heritage through education and research,” was reaffirmed during the ceremony.

Inaugural Session – 18 September 2025

The conference commenced on 18 September 2025 at Kala Mandapam with a traditional ceremonial lamp-lighting. The inaugural session was presided over by Registrar Dr. Srishti Dhawan. Subject experts and research scholars from India as well as Bangladesh, Sri Lanka, and Mauritius participated in the event.

The inauguration was marked by a Sarasvati Vandana group dance performance by disciples of Pandit Ram Mohan. The performers included Chanya Mudo, Asmi Ghosh, Janvi Pathak, and Rhythem Srivastava.

On this occasion, Naad Nartan instituted the Vidushi Krishna Bisht Endowment Award (2025) to support differently abled individuals who aspire to pursue music but lack the financial means to procure instruments. The first award was conferred upon Dr. Yogesh Kumar. He was honoured by Registrar Dr. Srishti Dhawan and Naad Nartan Director Prof. Ravi Sharma and was presented with a beautifully crafted sitar.

Technical session began in the afternoon after the lunch. All the research scholars were very enthusiastic in preparing and presenting their research paper. All the research scholars were informed well in advance of presenting their paper with PowerPoint Presentation and they strictly followed the instructions. The detail of 1st day paper presentation is mentioned below:

Paper presenters of Day 1 Session 1 18/9/2025

Chairpersons of the session: Prof. Rohitha Esver & Dr. Vedprakash Sharma

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Vijeta Sharma 04:32 to 12:08	कोरोना महामारी में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का डिजिटल रूपांतरण: नवाचार, परंपरा और वैश्विक पहुँच
Abha Singhal Bansal 12:11 to 19:40	Reconstructing the Natyashastra tradition of Kathak through medieval sculptures of North Gujarat
Dr. Anjali Devi Yadav 20:49 to 26:04	संस्थागत व्यवस्था में गुरु-शिष्य परंपरा का परिवर्तन

Sonali Marandi 26:20 to 30:40	Digital Aesthetic Strategies on Instagram vs. YouTube: Case Study of Young Hindustani Classical Musicians
Malini Ramsubramanya 31:00 to 37:35	Allied Ragas in Tyagaraja's lineage
Somitra Thakur 37:49 to 43:40	Surbahar in Bishnupur Gharana: From the Courts of Bahadur Khan to Modern Masters
Vrishali Dwivedi 43:57 to 50:50	जन-संगीत चेतना के संवाहक एवं सुरों के जादूगर : पंडित काशीनाथ बोडस
Suraiya Islam Ria (Bangladesh) 57:30 to 1:04:9	The Symbolic, Narrative and Aesthetic Significance of Museum's Sculptures used in Kathak Dance : A Dancer's Perspective
J Chandana Ruwan Kumara (Sri Lanka)	The Iconography of Female Musicians in Indian Buddhist Art
PGCMT Bandara (Sri Lanka) 1:08 to 1:14 11	The Improvisation of North Indian Raga-based Music on Sri Lankan Nurti Theatre Music
Chameera Lakshan (Sri Lanka) 1:15 to 1:19	A study of the evolution of Kathak dance tradition in the Darbar (royal court)
Isuru Rushan 1:19 to 1:24	A Comparative Study of the Nanumuraya Dance of Riddiyagaya Shanthikarmaya in Sri Lankan Low Country Traditional Dance and the Solah Shringar Used in Kathak Abhinaya in India

Paper presenters of Day 1, 2nd session 18/9/2025

Chairpersons of the session: Prof. Srishti Mathur and Dr. Pavani D

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Aditya Apte 3:00 - 9:35	Challenges in Teaching Improvisation and Aesthetic Nuance in Hindustani Classical Music Pedagogy
Antariksh Pasricha 9:46 - 16:17	Swar-Gyan in the Digital Age: AI's Expanding Role in Global Music Pedagogy, with Special Focus on Indian Classical Music Traditions
Mohit Mehta 16:27 - 24:44	The Role of Rupayan Sansthan in Preserving Oral Tradition of Rajasthan
Geeta Gupta 24:52 - 30:30	Pedagogical Transitions in Classical Arts Learning Indian Arts through MOOCs, Apps, and Online Platform
Neha Kumari 30:53 - 36:40	Kalakshetra's Influence on Evolution of Bharatanatyam Pedagogy
Soibam Monica Chanu 37:13 - 42:50	Music on spiritual approach Meitei death rituals
Aditya Madhusudan 43:01 - 51:10	Challenges in Teaching Improvisation and Aesthetic Nuance in Hindustani Classical Music Pedagogy
Namrta Lata 51:20 - 55:55	उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लोक संगीत पर समकालीन संगीत का प्रभाव: परंपरा और परिवर्तन पर अध्ययन
Panchangam Kalyan Haritas 56:15 - 1:04:56	Effect of Vocal trainer softwares and devices in modern vocal schooling
Ashu Kanti Sinha 1:05:10 - 1:09:35	Resonance and Reinvention: The Living Evolution and Survival of Indian Folk Song's Traditions
Mohit Bhaduri 1:09:54 - 1:16:40	Digital Aesthetics and Platform-Based Performances of Tabla on Social Media
Megha Pillai 1:16:50 - 1:23:40	Biography of K. Ponniah Pillai and his contribution towards music and dance

Paper presenters of Day 1, 3rd Session 18/9/2025

Chairpersons of the session: Sh. Naresh Kumar and Dr. Pragya Pyasi

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube

Title of paper

Shivram Narayan Mopkar 6:08 - 11:33	ताल पक्ष में 'लड़ी' का महत्त्व एवं उपयोगिता – तबला और कथक के संदर्भ से
Dr. Deepak Dabhade 11:40 - 18:00	पारंपरिक एकल तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का प्रस्तुतीकरण एवं आधुनिक परिवर्तन
Priti Yatin Varang 18:14 - 22:22	टप्पा की कतिपय अप्रचलित बंदिशों का अभ्यास तथा उनके प्रचार की आवश्यकता
Dr. Koijjam Sobita Devi & H. Rakesh Singh 22:34 - 28:50	Teaching-learning process through Arts and Aesthetics as Pedagogical lineages
Saikhom Pinky Devi 29:00 - 35:27	Folk Song of Meitei Community
Dr. Sanyukta Thorat 35:42 - 40:16	डिजिटल युग में प्रदर्शन शैलियाँ: यूट्यूब, इंस्टाग्राम और रील्स का प्रभाव एक अध्ययन
Dr. Pukhrambam Lilabati Devi 40:35 - 48:50	The Sacred Philosophy of Lai Haraoba
Neha Majumdar 49:00 - 55:10	Integrating 2D Design Principles to Enhance Solo Classical Dance Reels
Namrata Kumari 55:23 - 1:00:05	Listening Habits of Hindustani Music Learners: Patterns, Preferences, and Their Impact on Raga Perception and Performance
Joy Dey 1:00:16 - 1:04:04	Kobigaan: Bengal's Lost Poetic Duels
Monika Bhatt 1:04:11 - 1:10:36	मरू धरा के लंगा मांगणियार लोक संगीत संरक्षक : कोमल कोठारी (कोमल दा)
Rajesh Yadav 1:10:40 - 1:12:53	डिजिटल दर्शकों की सहभागिता और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायकों की प्रस्तुतीकरण शैली: 5 यूट्यूब चैनलों का एक अध्ययन
Atod Bayor 1:13:01 - 1:17:36	Institutional Education of Hindustani Classical Music in Arunachal Pradesh: Pedagogical Approaches, Challenges, and Pathways to Tribal Inclusion
Srijan Dhir 1:14:43 - 1:22:53	Strings and Scripts: ChatGPT's Role in Shaping Indian Music
Avinash Kumar 1:23:00 - 1:24:55	हिंदुस्तानी संगीत में रिकॉर्डिंग के माध्यम से प्रसारण; वैक्स सिलेंडर से युट्यूब तक की यात्रा
Rajan 1:25:02 - 1:30:30	भारतीय सुषिर वाद्य सुन्दरी
Dr. Rani 1:30:40 - 1:37:55	पं. कुमार गंधर्व का संगीत दर्शन : लोक और शास्त्रीय संगीत का समन्वय

On September 19, 2025, at Bhatkhande Sanskriti University campus, Kala Mandapam, the second day of the ongoing three-day International Conference was held.

Paper presentations day 2, 1st Session 2025

The first session was chaired by Dr. Seema Bhardwaj and Dr. Amardeep Singh

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Chaitanya Sinha 3:30 - 13:28	Rasoolan Bai and the Preservation of Purab Ang in Thumari Hindustani Classical Music
D Anantha Rao 13:30 - 18:37	Simplified Mukthayi System in Suladi Talas
Sunita Gangrade 18:42 - 24:40	हिंदी चित्रपट संगीत में रागदारी संगीत का प्रभाव एवं योगदान
Ganti Sriharsha 24:51 - 30:20	Bridge, Bow and Beyond: Tracing the legacy of Dr. L Subramaniam in global music
Anaida Naik 30:24 - 34:10	Pandit Jasraj's Haveli Sangeet: Bridging Devotion and Stage

Dr. Pragya Pyasi 34:18 - 39:44	Tracing Intermediality Across Eras: Chronological Transformations in Imdadkhani Gharana Sitar from Shellac to Digital Platforms
Priyanka Dixit 39:50 - 44:56	Preference for Drumming: Cross-Cultural Reinventions in Indian Music Therapy Practices
Dr. Vyzarsu Balsubrahmanyam 44:28 - 49:50	Bhumi Dundubhi: Tracing the resonance of an ancient ground drum-historical insights and experimental revival
Kalpna Goyal 49:57 - 54:18	संगीत कला को संरक्षित और संवर्धन करने में वनस्थली विद्यापीठ की भूमिका
Layapriya CMR 54:20 - 59:32	Notation Systems in Tirumala Inscriptions: Insights into Early Music Practice
Dr. Pavani D 59:42 - 1:07:52	Breaking Boundaries with Fewer Notes: Dr. M. Balamuralikrishna's Limited-Note Ragas in the Crosscurrents of Tradition and Change
Pranathi Vyzarsu 1:07:59 - 1:13:04	Guru-Sishya Parampara : Thyagaraja's Legacy in Innovation and Artistic Transformation
Chandni Saxena 1:13:07 - 1:19:31	From Beats to Brands: The Power of Music in User-Created Advertising Content
Ashish Dwivedi 1:19:43 - 1:24:02	Teaching Performing Arts in the Digital Age: Challenges and Possibilities
Amrit Asoori 1:24:12 - 1:27:36	Harmonising Imagination: Exploring the Impact of Music Learning on Creativity and Innovation in Children
Janani S 1:27:38 - 1:32:04	Flowing Melodies: Cultural and Symbolic Dimensions of River Imagery in the Compositions of Muthuswami Dikshitar
Naresh Kumar 1:32:09 - 1:40:26	“Bloomsbury gharana” of research on South Asian music
Dr. Rahul Prakash 1:40:34 - 1:47:18	इंदौर घराने की परंपरा को संवारने और रूपांतरित करने में पंडित अमरनाथ का योगदान
Manasa Pagadala 1:47:26 - 1:54:20	Melodic Confluence and Performance Perspectives: A Notational and Renditional Study of Swati Tirunal's Hindustani Composition

Paper presenters of Day 2, 2nd Session 19/9/2025

Chairmans of the sessions Dr. Manoj Mishra and Sh. Naresh Kumar

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Kaviya R 00:21 - 05:05	Cartographies of Melodies: A Geocultural Study of Rāga Names
Harmanjot Kaur 00:54 - 10:14	धारणा गायन शैली का उद्भव एवं विकास
Budhaditya Pradhan 10:16 - 17:40	Challenging Tradition and Redefining Identity in Indian Classical Music
Shreya Mishra 17:41 - 24:13	काशी में भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा का संरक्षण: रेडियो दूरदर्शन एवं सांगितिक आयोजनों की भूमिका
Vijay Shankar Mishra 24:16 - 30:32	तबला एवं मृदंगम वाद्य का तुलनात्मक अध्ययन एवं वादन में अंतर्संबंधिक प्रयोग
Vandana Khurana (Presented by Sheetal Mehta)	संगीत विषय के पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता में अद्यतिकरण एवं अंतःविषयक दृष्टिकोण की भूमिका
Priyanka Tigga 33:57 - 38:40	सोशल मीडिया के दौर में शास्त्रीय नृत्य का स्वरूप परिवर्तन
Deepika Ghadekar 38:47 - 43:25	Suhasini Koratkar -The Silent Torchbearer of The Bhendi Bazar Gharana
Usmeet Singh 43:29 - 48:39	Sacred Shifts: Gurmat Sangeet and the Dialogue Between Devotion and Modernity

Jaswinder Singh 48:48 - 52:20	Surinder Kaur: The Nightingale of Punjab and Her Legacy in the Golden Era of Punjabi Music
Divyasri Pisupati 52:53 - 58:23	Tradition in Transition: The Adaptive Art of the Modern Carnatic Musician
Abhijit Gadhekar 58:25 - 1:01:46	Ustad Kale Khan: A Legacy Beyond Recognition in The Ajrada Gharana
Sunita Kumari 1:01:48 - 1:04:34	गुरु-शिष्य परम्परा का संस्थागत व्यवस्थीकरण में रुपंतरिकरण
Smita Rai 1:04:37 - 1:06:58	पारंपरिक शिक्षण पद्धति और संस्थागत शिक्षण पद्धति : हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास का एक अध्ययन
Amandeep Singh (Presented by Jaswinder Singh)	गुरुमत संगीत परंपरा उद्गम एवं विकास
Rana Pratap Yadav 1:09:16 - 1:18:19	समकालीन हिन्दी रंगमंच : परम्परा और आधुनिकता का सुमेल
Antariksh Pasricha & Aditya Bhatnagar 1:18:22 - 1:26:18	Why Certain Music Feels More Resonant: A Frequency-Based Study of Shrutis, Natural Tuning, and the Psychoacoustic Appeal of Music — With Observations from High School classrooms.
Pratibha Kumari 1:26:21 - 1:28:04	भोजपुरी फ़िल्म में लोकगीतो का विश्लेषणात्माक अध्ययन

- Kalpana presented research on the musical contributions of Banasthali Vidyapith, upon which Dr. Manoj Mishra noted that all the subjects are being taught except table and suggested that there should be a formal teaching of the table at Banasthali Vidyapeeth, a proposal that was agreed upon by the experts.
- Dr. Naresh Kumar in his address said “For meaningful research in music, harmony among multiple languages is essential. Moreover, establishing standards in Indian research comparable to Western scholarship is necessary; therefore, their research methodologies and techniques should be adopted.”
- At the conclusion of the session, Chairperson Dr. Manoj Mishra remarked that studies based on artists such as Suhasini Kortkar, Surinder Kaur, or Kale Khan do not qualify as research papers but rather take the form of editorial compilations. He stressed that research papers must be original in nature.
- Chairperson Dr. Naresh Kumar, in his closing remarks, advised that scholars should not present their entire Ph.D. synopsis as a paper. Instead, they should select a small portion of it and develop that into a research paper.

Paper presenters of Day 2, 3rd Session 19/9/2025

Chairman of the session: Prof. Kumkum Dhar and Sh. Gyanendra Dutt Bajpai

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Prajakta Uparkar 03:05 - 09:20	परंपरा और नवाचार के बीच: कथक में प्रयुजन पर परंपरागत गुरुओं के दृष्टिकोण
Aparna Mahesh Panse 09:24 - 15:05	Integrating Kalā and Śāstra in Kathak: Traditional Aesthetics in a Modern Therapeutic Framework for Children with Cerebral Palsy
Anjali Girdhar 15:06 - 20:08	Ghungroos Speak Shakespeare: Romeo & Juliet in Kathak
Ragini Kalyan 20:09 - 24:14	From Ephemeral to Eternal: Role of Archival Practices in Safeguarding the Performing Arts
Ayushi Mishra 24:19 - 29:11	Gender and Costumes in Kathak: Tradition, Transformation, and Inclusivity
Shikha Ramesh 29:15 - 33:48	Bridging Tradition and Technology: the Evolution of Kathak Pedagogy in the 21st Century
Rutu N Raj & Rohitha Esver 33:50 - 40:42	Change and Dynamism in Theyyam: A Perspective towards Modernism
Ekta Singh 40:43 - 49:19	गुरु शिष्य परंपरा का संस्थागत शैली में परिवर्तन

Jaishika Singh 49:22 - 54:44	Cultural Transition: Indian Youth's Predilection for Western Dance Over Indian classical dance in the context of kathak
Amrit Mishra 54:47 - 01:04:19	“Upaj” a pedagogical and psychological aspect of Kathak Dance-framing the creative mind with spontaneity
Asawari Patankar 01:04:25 - 01:09:50	कथक नृत्य में उत्सुकता से उपज की ओर बढ़ते हुए रियाज का महत्व
Aasawri Singh 01:09:53 - 01:13:55	Dance Direction Based on Kathak: Changing Socio-Cultural Contexts
Upma Shukla 01:13:58 - 01:19:58	कथक में कथा-कथन शैली के दो छोर : परंपरा और प्रयोग
Akshar Tekchandani 01:19:59 - 1:27:49	Kathak and Sindhi Bhagat Tradition: A Comparative Attempt
Arvind Kumar Azad 01:27:53 - 01:32:35	एकल तबला वादन में बनारस घराने की अभिव्यक्ति में परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य

- At the conclusion of the session, Chairperson Prof. Kumkum Dhar observed that nearly all the remaining papers were directly based on the authors' primary research. Chairperson Dr. Gyanendra Datt Bajpai appreciated the innovative experiments being undertaken in the field of music.

Paper presenters of Day 2, 4th Session 19/9/2025

Chairpersons of the session: Prof. Ravi Sharma and Dr. Vedprakash Sharma

Name and Timeline of Videos uploaded on Youtube	Title of paper
Shripad Pradip Shirwalkar 00:07-05:27	खानदेश के जनपदीय लोकवाद्य परंपरा और वर्तमान
Bhadra Priya K 05:29 - 11:49	Changing Trends of Preserving Indian Classical Music: Study of Notation Writing System
Abhashika Bahre 11:50 - 17:32	Echoes Beyond Borders: - Global Journey of Performing Arts as Soft Power After Post Independence Era
Vishal Lout 17:34 - 21:30	Music Business and Ownership of C-LINE Rights
Muskan Kumari 21:35 - 25:37	विभिन्न महिला तबला कलाकारों का विकास:- 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के संदर्भ में
Ekta Naithani 25:40 - 30:02	Tunes of the Everyday: Salil Chowdhury's Musical Depiction of Middle-Class Life in Chhoti Si Baat and Rajnigandha
Udita Biswas 30:03 - 34:39	The Tri-Chakri Parans of Muraj Paran Pushpakar
Arti Pant 34:51 - 38:42	भारतीय संगीत में मंचों का विकास : नाट्यशास्त्र से आधुनिक ऑडिओरियम तक
Dr. Jyoti Sharma 38:46 - 44:38	उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एन. जैड सी.सी) पटियाला का विरासती कलाओं के विकास में योगदान
Rudra Shankar Mishra 44:41 - 49:40	Unlocking Improvisation: Overcoming Pedagogical Challenges through Systematic Tihai Construction in Multiple Tāla-s
Dr. Bindu M V 49:43 - 54:49	Regional Folk Art Forms of Kerala And Their Struggle for Recognition
Neha Mathur 54:53 - 59:33	Hindustani Music and its Pedagogy: Tradition, Transformation, and the New Education Policy
Suruchi Nidhi 59:35 - 1:06:07	Reviewing of NCERT art education textbook under NEP 2020: Indian classical dance pedagogy and cognitive relevance in modern schooling
Priya Saini 1:06:10 - 1:09:11	डिजिटल युग में कथक नृत्य की शिक्षण पद्धति का रूपांतरण
Srishti Awasthi 1:09:14 - 1:14:37	परम्परा और नवाचार: उस्ताद राशिद खान के सन्दर्भ में
Jhankrit Shrivastava 1:14:40 - 1:17:34	The Impact of Online Learning on the Guru-Shishya Parampara of Tabla
Nandini Bametha 1:17:40 - 1:19:42	युवा सितार वादक ऋषभ रिखिराम शर्मा के प्रस्तुतिकरण में परम्परा एवं आधुनिकता का संगम

Academic Deliberations

Approximately 125 research scholars from various parts of India and abroad presented their research papers. The deliberations reflected a harmonious confluence of tradition and modernity. Scholars emphasized the need to integrate ancient knowledge systems with digital environments while preserving the essence of classical traditions.

A significant consensus emerged that despite rapid digital transformation, the legacy of gharana-based traditions will continue to thrive and remain relevant.

Valedictory Session – 20 September 2025

The conference concluded on 20 September 2025 with the distribution of Best Research Paper Award 2024 and certificates to all the research scholars by the Registrar of University Dr. Srishti Dhaon.

Nomenclature of awards and their winners are mentioned below:

Naad Nartan Excellent Research Paper Award 2024: Supported by Prof. Ravi Sharma. Former Dean and Head, Deptt. Of Music, Maharshi Dayanand University, Rohtak and Smt. Mohini Sharma, Treasurer, Naad Nartan

Chandni Saxena, Monika Soibam Chanu, Dr. Heena Fatima, Anjali Girdhar, Ganga Priya, J.C.R. Kumara, Dr. Koijam Sobita Devi & Dr. H. Rakesh Singh, Vishal Laut, Priyanka Dixit.

The Symphony of Music in Contemporary Indian Digital Advertising

Chandni Saxena

Research Scholar, College of Art
University of Delhi

Abstract

The paper aims to analyze the role of music in Indian digital advertising and its contribution to shaping social trends in India. Music is an essential tool for advertisers to have in their arsenal due to its ability to arouse emotions, reaffirm brand identification, connect with particular audiences, and adjust to shifting cultural norms. It is a powerful tool for brands to tap into each of these areas to reach their consumers. The findings of the paper suggest that music significantly enhances consumer engagement, fosters emotional connections, and contributes to the creation of new popular culture and social trends in India. The study also highlights the importance of music in shaping brand identity, creating brand loyalty, and increasing brand recall in Indian advertising.

Nat Sankirtan in Maitei Shraddha Ceremony

Monika Soibam Chanu

Research Scholar, Lovely Professional University,
Jalandhar

In the Meitei Shraddha ceremony, Nat Sankirtan holds a central place as both a spiritual and cultural practice. Through devotional singing and intricate rhythmic expressions, it honors the ancestors while guiding the soul of the departed in its spiritual passage. At the same time, it invites collective participation, strengthening bonds within the community and affirming a shared cultural identity. In this way, Nat Sankirtan serves as a vital link that unites religious devotion, ancestral reverence, and the ongoing preservation and expression of Meitei cultural heritage.

Amalgamation of Art Forms: Initial Composition in Indian Art

Dr. Hina Fatima Moinee

Assistant Professor, Deptt. Of Fine Arts, Aligarh Muslim University,
Aligarh

Abstract

Indian art-forms are innate composition of different art mediums, 'embedded' in the social fabric of India. They reinforce each other. Rasa being the fundamental principle behind every Indian art activity spreads across all emotional variety. It serves as a compelling reflection of the intrinsic beauty and philosophy underlying Indian aesthetics. Jaydeva's Geet-Govinda, Keshav Das' Rasikpriya, Bhandudatta's Rasamanjari, Bilahana's Chaurapanchiska, and Nanddas' Nayika-Bhed are love poems and each has been given constant attention by painters. Seasons were painted and of these baramasa miniatures are examples of these efforts. Also, the aesthetic and emotional dimensions of ragas (Indian Classical Music) were visualized in painting. Soon, poetry, drama architecture, painting, music were imaginatively perceived as corresponding expressions of a shared aesthetic principle.

Pedagogical excellence the innovative teaching methods of Pt. Birju Maharaj in kathak

Anjali Girdhar

Research scholar, Sri Sri Centre of Advance Research in Kathak
FACIS, Sri Sri University, Cuttack Odisha

Abstract

This paper explores how Maharaj Ji's creative approaches—ranging from playful learning techniques and simplified rhythmic patterns to storytelling and codification—have transformed Kathak pedagogy. The study highlights how his teaching innovations made Kathak accessible worldwide while staying rooted in tradition by exploring author's personal experience and interviews with teachers and students along with available literature.

वृन्दावन के देवालयों की दैनंदिनी समाज गायन परंपरा का वर्तमान अस्तित्व गंगा प्रिया

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश में स्थित वृन्दावन के देवालयों में प्रचलित संगीत परंपरा से सम्बन्धित है। प्राचीन देवालयी संगीत परंपरा को समझने के लिए वर्तमान में यहां के मंदिरों में गाई जाने वाली लगभग 300 वर्ष पुरानी 'समाज' गायन परंपरा का अवलोकन करके इसकी वर्तमान स्थिति एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

Music Iconography portrayed in South Asian Buddhist Arts (Based on Veena engravings in Pitalkhora Buddhist cave)

J. Chandana Ruwan Kumara

Research Scholar,
Department of Instrumental Music, Banaras Hindu University

Abstract

The present study aims to address the research question: 'Is the seven-stringed Veena exhibited at the Pitalkhora Buddhist cave temple similar in shape to the Veena found in ancient Mesopotamian, Egyptian, Persian, Greece-Roman or is it influenced by those Hindu practices?' The study used a literature survey and an examination of

archaeological data. Archaeological investigation was carried out to find any structural evidence to identify and analyze the shape of the seven-stringed Veena carved at Pitalkora.

Significance of the Pena in the Meitei Society

Dr. Koijam Sobita Devi & Dr. H. Rakesh Singh

Department of Teacher Education, Manipur University,
Canchipur, Imphal West

Abstract

Since the dawn of human civilization, humans have integrated indigenous musical instruments in their customs and culture. The Pena is an indigenous mono-string musical instrument with a fiddle bow, falling within the chordophone category is one of the oldest traditional musical instruments of the Meiteis of Manipur, Northeast, India which holds historical and cultural importance. The Pena consists of the Maroo (resonator) and the Cheijing (fiddle bow) which symbolizes creation and fertility. Cultural rituals and other important events in the early Meitei society were often accompanied with Pena music. This study aims to examine the components of the Pena and their significance, the evolution of its usage, the attire of the Pena artist and the attitudes of the youth towards this traditional musical instrument. This research is historical, descriptive and qualitative, drawing on published works, historical documents, field surveys and interviews. The Pena remains vital in Meitei music, with growing interest among youth driven by cultural pride. The emergence of women Pena players highlights the changing attitude. Further research and documented Pena musical notation are essential for preserving and promoting this art form.

Awareness Among Artists about Music Business in the New Age Music Industry

Vishal Lout

Research Scholar, Department of Music, Maharshi Dayanand University, Rohtak

Abstract

This research paper explores how artists can better monetize their recorded music in an independent music landscape. By examining the distinction between compositional (C-Line) and sound recording (P-Line) rights, the study highlights a critical gap in artists' knowledge of music business fundamentals. Through interviews and survey data, the paper concludes that while an understanding of distribution and publishing tools is key to earning royalties, most independent artists remain unaware of these essential revenue streams.

Soundtracks of Wellness: The role of film songs in Indian music therapy

Priyanka Dixit

Research scholar, Department of Performing Arts, Bangalore University

Abstract

Her study explored how film songs, deeply rooted in Indian culture, can be used in music therapy. She examined how their melody, rhythm, and lyrics support emotional expression and improve mental and physical health, making therapy more relatable and effective.

Youngest Researcher Award 2024

Ritu N. Raj

Youngest Research Award 2025 Supported by Dr. Pragya Pyasi, Assistant Professor, Department of Music, University of Hyderabad, Hyderabad

Reflections of Contemporary Society of Vijayanagara through Purandara Dasa's Devaranamas

Rutu. N. Raj

The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Gujarat

Abstract

Her (Rutu N Raj) paper titled "Reflections of Contemporary Society of Vijayanagara through Purandara Dasa's Devaranamas" focuses on understanding the socio-cultural history of common people and the untold social narratives of the people who belonged to the Vijayanagara Empire, keeping the existing Devaranamas composed by Purandara Dasa as one of the significant intangible evidence, she has attempted in understanding the vernacular culture of people lived during the Vijayanagara.

NJ Prize for Outstanding Music History Paper 2024 Award Supported by Sh. Naresh Kumar

Associate Professor, Department of History, Kamla Nehru College,
University of Delhi, Delhi

भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता 'हड़प्पा' के संदर्भ में संगीत की रूपरेखा

डॉ. स्कन्द मंजुल Dentio orcheologist Sharda University, Delhi एवं

डॉ. चित्रा शंकर, Archeo Musiocologist

शोध सार

हड़प्पा जिसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अब तक की चार प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। पुरातात्विक उत्खनन से उपलब्ध पुरावशेषों के आधार पर यह अपने सांस्कृतिक मूल्यों में संगीत की रूपरेखा को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकती है, इस तथ्य को ही चयनित शोध-पत्र में केंद्रित करने का प्रयास किया गया है।

Following the award ceremony, the 4th Naad Nartan Festival of Dance and Music was conducted featuring performances by distinguished artists from across India.

Conclusion

The conference concluded with a vote of thanks delivered by Prof. Ravi Sharma, Director of the Conference. He expressed sincere gratitude to Vice-Chancellor Prof. Mandavi Singh, Registrar Dr. Srishti Dheon, the university staff, session chairpersons, the organizing committee, and members of Naad Nartan for their dedicated efforts.

He assured the participating scholars that the next edition of the conference would be organized the following year with a new theme at a different venue in India, continuing the mission of promoting research, cultural exchange, and preservation of India's rich musical heritage.

Contents

❖	Editorial	3
❖	Report of 7 th International Conference and Concert 2025	9
❖	वन्दे मातरम् के 150 वर्ष	
1.	Echoes Beyond Borders:– The Global Journey of Performing Arts as a Tool of Cultural Diplomacy in Post-Independence Era <i>Abhashika Bahre</i> <i>Prof. (Dr.) Vidhi Nagar</i>	23
2.	Resonance and Transformation: The Living Evolution and Survival of Indian Folk Song Traditions <i>Ashu Kanti Sinha</i> <i>Dr. Rakesh Kumar</i>	31
3.	The Decline of Audio Cassettes in India <i>Avinash Kumar</i> <i>Dr. Richa Mishra</i>	34
4.	Challenging Tradition and Redefining Identity in Indian Classical Music <i>Budhaditya Pradhan</i> <i>Dr. Rajesh Shah</i>	39
5.	Rasoolan Bai and the Preservation of Purab Ang Thumri in Hindustani Classical Music <i>Chaitanya Sinha</i> <i>Dr. Udaya Kiran KT</i>	45
6.	A Study of the Evolution of Kathak Dance Tradition in the Darbar (Royal Court) <i>Mr. A.W.A. Chameera Lakshan</i>	51
7.	Tradition In Transition The Adaptive Art of The Modern Carnatic Musicians <i>Divyasri Pisupati</i> <i>Dr. Vyzarsu Balasubramanyam</i>	57
8.	Pedagogical Transitions in Indian Classical Music: MOOCs, Apps, and Online Platforms <i>Dr. D.V.K. Vasudevan</i>	63
9.	Bridge, Bow and Beyond: Tracing the legacy of Dr. L Subramaniam in global music Ganti Sriharsha <i>Dr. Pavani Duddu</i>	67
10.	Reconstructing the Natyashastra tradition of Kathak through medieval sculptures of North Gujarat <i>Abha Singhal Bansal</i> <i>Professor (Dr.) Bhawna Grover</i>	73
11.	Why Certain Music Feels More Resonant: A Frequency-Based Study of Shrutis, Natural Tuning, and The Psychoacoustic Appeal of Music - With Observations From High School Classrooms <i>Antariksh Pasricha</i> <i>Aditya Bhatnagar</i>	79

12.	From Tradition to Therapy: Integrating Kalā and Śāstra in Kathak for the Holistic Development of Children with Cerebral Palsy	86
	<i>Mrs. Aparna Mahesh Panse</i>	
	<i>Dr. Nandkishore Kapote</i>	
13.	Dance Direction Based on Kathak: Changing Socio-Cultural Contexts	91
	<i>Aasawri Singh</i>	
14.	Critical Analysis of the Application of New Education Policy 2020 to Hindustani Classical Music at Universities: Advantages and Challenges	98
	<i>Dr. Atindra Sarvadikar</i>	
15.	Gender and Costumes in Kathak: Tradition, Transformation, and Inclusivity	103
	<i>Ayushi Mishra</i>	
	<i>Dr. Aparna Bhat</i>	
16.	A Comparative Study of the Nanumuraya Dance of Riddiyāgaya Shanthikarmaya in Sri Lankan Low Country Traditional Dance and the Solah Shringar Used in Kathak Abhinaya in India	112
	<i>Isuru Rushan Kapuduwa</i>	
	<i>Dr. Dipanwita Singha Roy</i>	
17.	Cultural Transition: Indian Youth's Predilection for Western Dance Over Indian Classical Dance in the context of Kathak	118
	<i>Jaishika Singh</i>	
18.	The Iconography of Female Musicians in Indian Buddhist Art	122
	<i>J. Chandana Ruwan Kumara</i>	
	<i>Dr. B. Satya Vara Prasad</i>	
19.	Music on Spiritual Approach in Meitei Death Rituals	130
	<i>Soibam Monica Chanu</i>	
	<i>Dr. Kumar Sargam</i>	
20.	Kobigaan Bengal's Fragile Heritage of Poetic Duels	137
	<i>Joy Dey</i>	
21.	Notation Systems in Tirumala Inscriptions: Insights into Early Music Practice	142
	<i>Layapriya CMR</i>	
	<i>Dr. Vyzarsu Balasubrahmanyam</i>	
22.	The Sacred Philosophy of Lai Haraoba	152
	<i>Dr. P. Lilaabati Devi</i>	
23.	The Improvisation of North Indian Raga-Based Music in Sri Lankan Nurthi Theatrical Music	161
	<i>P.G.C.M.T. Bandara</i>	
24.	Strings and Scripts: ChatGPT's Role in Shaping Indian Music	168
	<i>Srijan Dhir</i>	
	<i>Dr. Amrapali</i>	
25.	Bridging Tradition and Technology: The Evolution of Kathak Pedagogy in the 21 st Century	174
	<i>Ms. Shikha Ramesh</i>	
	<i>Prof. (Dr.) Vidhi Nagar</i>	

26.	Change and Dynamism in Theyyam: A Perspective towards Modernism <i>Rutu. N. Raj, Prof (Dr) Rohitha Eswer</i>	180
27.	From Ephemeral to Eternal: Role of Archival Practices in Safeguarding the Performing Arts <i>Ms. Ragini Kalyan, Prof. Dr. Vidhi Nagar</i>	185
28.	Folk Song of Meitei Community <i>Saikhom Pinky Devi</i>	190
29.	The role of Recorded music in clinical music therapy practice in India <i>Priyanka Dixit</i>	195
30.	Legal and Ethical Frameworks in Using Traditional Compositions: A Focus on Indian Classical Music and Dance <i>Dr. Mrs. Putanjani Mungar Purgus</i>	200
31.	Modernizing Vocal Schooling : Impact of Training Devices and Software Tools <i>Mr. Panchangam Kalyan Haritas</i>	210
32.	Kalakshetra's Influence on Evolution of Bharatanatyam Pedagogy <i>Neha Kumari, Dr. Khileshwari Patel</i>	217
33.	The 'Bloomsbury Gharana' : A Genealogy of scholars of South Asian Music <i>Naresh Kumar</i>	223
34.	Listening Habits of Hindustani Classical Music Learners: Patterns, Preferences, and Their Impact on Raga Perception and Performance <i>Namrata Kumari, Dr. Pragya Pyasi</i>	231
35.	Swar-Gyan (Note Identification) in The Digital Age : An Analytical Exploration of AI's Expanding Role in Global Music Pedagogy, With A Special Focus on Indian Classical Music Traditions <i>Antariksh Pasricha</i>	238
36.	Allied Rāgas in Tyagaraja's Lineage <i>Malini Ramasubramanya, Dr. M S Parameswaran</i>	243
37.	Preference for Drumming: Cross-Cultural Reinventions in Indian Music Therapy Practices <i>Priyanka Dixit, Dr. K.V. Sriharsha</i>	251
38.	Ghungroos Speak Shakespeare: Romeo and Juliet in Kathak <i>Anjali Girdhar, Dr. Manjiri Deo</i>	256
39.	Digital Aesthetics, Performance Formats and Audience Engagement of Indian Classical Tabla on Youtube <i>Mohit Bhaduri, Dr. B. Satya Vara Prasad</i>	264
40.	संगीत कला को संरक्षित और संवर्धन करने में वनस्थली विद्यापीठ की भूमिका <i>कल्पना गोयल, डॉ. ऐश्वर्या भट्ट</i>	271
41.	एकल तबला वादन में बनारस घराने की अभिव्यक्ति में परंपरा और आधुनिकता का सामंजस्य <i>पंडित अरविंद कुमार आजाद</i>	279

42.	कथक नृत्य में उत्स्फूर्तता से उपज की ओर बढ़ते हुए रियाज का महत्त्व <i>आसावरी पाटणकर</i>	285
43.	धारणा गायन शैली का उद्भव एवं विकास <i>हरमनजोत कौर, डॉ. रानी</i>	290
44.	उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र पटियाला का विरासती कलाओं के विकास में योगदान <i>डॉ. ज्योति शर्मा</i>	294
45.	मरू धरा के लंगा मांगणियार लोक संगीत संरक्षक : कोमल कोठारी (कोमल दा) <i>मोनिका भट्ट, डॉ. पूर्वी लुनियाल</i>	300
46.	परंपरा और नवाचार के बीच कथक में फ्यूजन/ कंटेम्पररी प्रयोग पर परंपरागत गुरुओं के दृष्टिकोण <i>प्राजक्ता लक्ष्मीकांत उपरकर</i>	305
47.	कुमाऊँ में शास्त्रीय तबला वादन के प्रचार-प्रसार में डॉ. विजयकृष्ण की भूमिका <i>प्रियतोष कर्नाटक, डॉ. गंगा तमांग</i>	311
48.	समकालीन हिन्दी रंगमंच : परम्परा और आधुनिकता का सुमेल <i>डॉ. राणा प्रताप यादव</i>	315
49.	पंडित कुमार गंधर्व का संगीत दर्शन : लोक और शास्त्रीय संगीत का समन्वय <i>डॉ. रानी</i>	320
50.	तबला एवं मृदंगम वाद्य का तुलनात्मक अध्ययन एवं वादन में अंतर्संबंधिक प्रयोग <i>विजय शंकर मिश्र</i>	323
51.	जन-संगीत चेतना के संवाहक एवं सुरों के जादूगर : पंडित काशीनाथ बोडस <i>वृषाली द्विवेदी, प्रो. डॉ. रुचिमिता पाण्डे</i>	327
52.	कोरोना महामारी में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का डिजिटल रूपांतरण: नवाचार, परंपरा और वैश्विक पहुँच <i>विजेता शर्मा, डॉ. अश्विनी कुमार</i>	332
53.	विषय: ताल पक्ष में 'लड़ी' का महत्त्व एवं उपयोगिता – तबला और कथक के संदर्भ से <i>शिवराम नारायण मोपकर, डॉ. उदय कुलकर्णी</i>	337
54.	खानदेश के जनपदीय लोकवाद्य परंपरा और वर्तमान <i>श्रीपाद प्रदीप शिरवलकर</i>	347
55.	भरत का पूर्वरंग विधान और संगीत <i>डॉ. गुंजन कुमार झा</i>	352
56.	इंदौर घराने की परंपरा को सँवारने और रूपांतरित करने में पंडित अमरनाथ का योगदान <i>डॉ. राहुल प्रकाश</i>	359